B-324
L-10
Ethics

नागरिक समाज (Civil Society)

नागरिक समाज ऐसे गैर सरकारी संगठन जैसे- महिला, मजदूर, कृषक आदि के समूचे वर्ग को इंगित करता है जो सार्वजनिक नीति एवं सम्पूर्ण समाज को अपने क्रियाकलापों से प्रभावित कर अधिक से अधिक न्याय और स्वतंत्रता की वकालत करता है।

नागरिक समाज ने जनता को शिक्षित एवं जागरूक कर भ्रष्टाचार को रोकने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

नागरिक समाज निम्नलिखित प्रकार से मूल्यों को बढ़ावा देता है-

(i) नागरिक समाज सरकारी नीति एवं योजनाओं के क्रियान्वयन एवं निगरानी की प्रक्रिया में जनसहभागिता को सुनिश्चित करता है।

(ii) यह प्रशासन को जनता के प्रति उत्तरदायी एवं संवेदनशील बनाता है।

(iii) नागरिक समाज भ्रष्ट गतिविधियों को रोकने हेतु सरकार पर दबाव बनाता है तथा जनता को शिक्षित एवं जागरूक कर भ्रष्टाचार रोकने की प्रणालियों विकसित करने में मदद करता है।

(iv) नागरिक समाज स्थानीय मुद्दों की तरफ

सरकार का ध्यान आकर्षित करते हैं और इस रूप में जनहित के कार्यों को बढ़ावा देते हैं।

उदाहरण →

भारत में सूचना का अधिकार अधिनियम-2005, शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009, राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम-2013, इत्यादि के सन्दर्भ में नागरिक समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

(v) नागरिक समाज, महत्वपूर्ण सामाजिक लक्ष्यों जैसे पर्यावरण संरक्षण, लिंग समानता, स्वास्थ्य जागरूकता, मानवाधिकार संरक्षण, विश्व शान्ति आदि के सन्दर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS

(vi) नागरिक समाज ने गरीबों, मजदूरों और उपेक्षितों को संगठित कर उनके हितों की रक्षा के लिए महत्वपूर्ण स्वीकार किये हैं।

मूल्यों को बढ़ावा देने में मीडिया की भूमिका :-

- मीडिया को जनता के समक्ष सूचनाएँ निष्पक्ष रूप में रखनी चाहिए और इस क्रम में मानवीय मूल्यों और संवेदनाओं को ध्यान में रखना चाहिए।

- मीडिया को ऐसे विज्ञान और कार्यक्रमों से परहेज करना चाहिए जिससे समाज में अंधविश्वास अश्लीलता और परस्पर अंधविश्वास को बढ़ावा मिलता है।

- सत्यमेव जयते जैसे कार्यक्रम, छपाक, पैडमैन, बागबान, तारे जमीं पर, PK इत्यादि।

मूल्यों को बढ़ावा देने में शैक्षाणीक संस्थानों की भूमिका :-

शैक्षाणीक संस्थान
↓

क्लास रूप शिक्षण

विषय वस्तु का ज्ञान, नैतिक शिक्षा, कौशल विकास, महान विचारकों के उपदेश, विचार आदि।

- नैतिक चेतना, सामाजिक चेतना, पर्यावरणीय चेतना जागृत किया जाये इत्यादि

सहपाठ्यक्रम शिक्षण

(i) खेल-कूद, ग्रुप, सहयोग, टीम वर्क, अनुशासन एकता, संवेगात्मक बुद्धि इत्यादि।

(ii) सांस्कृतिक गतिविधियां
- 15 अगस्त
- 26 जनवरी
- 2 अक्टूबर
- विवेकानंद जयंती
- NSS समाज सेवा
- NCC अनुशासन एकता देशभक्ति इत्यादि।

- केवल अक्षर ज्ञान या पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नही बल्कि :-

KGS KHAN GLOBAL STUDIES IAS Most Trusted Learning Platform KHAN SIR

- चरित्र निर्माण
- व्यक्ति का सर्वांगीण विकास
- आंतरिक क्षमता का साकारिकरण
- मानव निर्माण
- सभ्य समाज का सभ्य नागरिक बने।

- मनुष्य के भीतर विद्यमान संभावनाओं के साकारिकरण एवं चरित्र निर्माण में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका महत्वपूर्ण है।

- भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति में यह कहा गया कि हमारे बहुधर्मी बहुजातिय, बहुभाषीय समाज में शिक्षा को महत्वपूर्ण बनाना चाहिए और शाश्वत मूल्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि जन मानस में एकता की भावना बढ़े और संकीर्ण मानसिकता, कट्टरता भ्रष्टाचार, अंधाविश्वास और भाग्यवाद को समाप्त किया जा सके। इसके लिए वैज्ञानिक प्रवृत्ति (समानता, स्वतंत्रता, न्याय, बंधुता) पर्यावरणीय संरक्षण, मानवतावाद, प्रजातांत्रिक मूल्य आदि को शिक्षा के सभी स्तरों (प्राथमिक और माध्यमिक) पर बढ़ावा देना चाहिए।

- खेल-कूद संबंधी गतिविधियों का व्यवस्थित रूप के माध्यम से विद्यार्थियों में अनुशासन धैर्य, सहयोग, टीमवर्क, बौद्धिक क्षमता, शारीरिक एवं मानसिक विकास, संवेगात्मक बुद्धि का

विकास आदि को बढ़ावा दिया जा सके।

- शैक्षणिक संस्थानों में राष्ट्रीय पर्व जैसे - 15 अगस्त, 26 जनवरी, आदि को उत्साहपूर्वक मनाना चाहिए ताकि बच्चों में स्वतंत्रता के महत्व को प्रतिष्ठित करे। इससे उनमें देश भक्ति की भावना जागृत हो।

- महान नेताओं, विचारकों, सुधारकों आदि के जन्मदिन को शैक्षणिक संस्थाओं में मनाया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थी इनके विचारों एवं योगदानों से परिचित हो सके।

- नैतिक शिक्षा तथा कहानियों का जैसे पंचतंत्र, हितोपदेश आदि का पठन, पाठन, नाटक, मंचन शैक्षणिक संस्थानों में होना चाहिए।

- NSS, NCC के माध्यम से समाज की सेवा तथा अनुशासन, एकता, देशभक्ति को बढ़ावा दे सकते हैं।

नयी शिक्षा नीति

किन मूल्यों को बढ़ावा देने में मददगार

स्वावलंबन, देशभक्ति, प्रकृति प्रेम, सदाचार, उद्यमशीलता (नौकरी देने वाले बनो) कौशल विकास, सांस्कृतिक विविधता एवं धरोहर का संरक्षण, सामाजिक न्याय को बढ़ावा, समावेशी समाज का विकास, विषय चयन को लेकर स्वतंत्रता, जिम्मेदार, संवेदनशील नागरिक का निर्माण, शिक्षा का सार्वभौमिकरण, बहु-विषयक दृष्टिकोण को बढ़ावा, खेल-कूद और योग।

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR